खण्ड—6 संख्या—6

एकादश बिहार विधान—सभा

विधान—सभा (वादवृत्त)

(भाग—1)

कार्यवाही प्रश्नोत्तर

सोमवार, तिथि 1 जुलाई, 1996 ई0

श्री मुख्यिा को नियुक्त करना

122. श्री अभय राज किशोर :– क्या मंत्री, गृह (आरक्षी) विभाग, यह बतलाने की कृपा करेंगे कि :–

1. क्या यह बात सही है कि मधुबनी जिलान्तर्गत फुलपरास प्रखंड के रामनगर सुरियाही पंचायत, पुरनदास टोला, वार्ड नं0–4 में 90 प्रतिशत हरिजन पिछड़े जाति के लोग निवास करते हैं,

2. क्या यह बात सही है कि उक्त टोला में आजादी के बाद से अभी तक चौकीदार का पद रिक्त है,

3. क्या यह बात सही है कि अनुमण्डल पदाधिकारी ने अपने ज्ञापांक 959 दिनांक 24 जुलाई 1993 के संदर्भ में दिये गये अपने प्रतिवेदन में कहा है कि अस्थायी रूप से श्री समदेव मुख्यिा पिता– श्री रसिक लाल मुखिया चौकीदार के रूप में फिलहाल कार्य कर रहे हैं,

4. यदि उपर्युक्त खंडों के उत्तर स्वीकारात्मक है, तो क्या सरकार अनुमण्डल पदाधिकारी के पत्रांक 424 दिनांक 24 दिसम्बर, 1993 के आलोक में श्री रामदेव मुखिया को चौकीदार के रूप में नियुक्त करने का विचार रखती है, हाँ, तो कबतक, नहीं, तो क्यों ?

श्री रघुनाथ झा :– महोदय खंड–1 उत्तर अस्वीकारात्मक है।

खंड–2 उत्तर अस्वीकारात्मक है।

खंड–3 उत्तर अस्वीकारात्मक है।

खंड–4 प्रश्न की कंडिका 1 से 3 के आलोक में प्रश्न ही नहीं उठता है।

श्री मंडल का स्थानान्तरण

123. श्री बाबू लाल :– क्या मंत्री, कार्मिक एवं प्रशासनिक सुधार विभाग यह बतलाने की कृपा करेंगे कि :–

1. क्या यह बात सही है कि नवादा जिलान्तर्गत रजौली को अनुमण्डल का

दर्जा 1992 में दिया गया हैं,

2. क्या यह बात सही है कि जब से रजौली अनुमण्डल बनाया गया है तब से अनुमण्डल पदाधिकारी के रूप में श्री राम विलास मंडल पदस्थापित हैं,

3. क्या यह बात सही है कि सरकारी आदेशानुसार कोई भी पदाधिकारी या कर्मचारी को एक स्थान पर 3 वर्ष से अधिक पदस्थापित रहने का प्रावधान नहीं है,

4. यदि उपर्युक्त खंडों के उत्तर स्वीकारात्मक है, तो श्री मंडल का स्थानांतरण नहीं करने का क्या औचित्य है ?

श्री तुलसी सिंह :– महोदय, खंड–1 उत्तर स्वीकारात्मक है।

खंड–2 उत्तर स्वीकारात्मक है।

खंड–3 यह सही है कि सामान्यतः किसी भी सरकारी सेवक को एक स्थान पर तीन वर्ष से अधिक अवधि तक पदस्थापित रखने का प्रावधान नहीं है लेकिन श्री मंडल वरीय प्रवर कोटि के पद पर प्रोन्नति हेतु योग्य सूची में है तथा इसका पदस्थापन उच्चतर पद पर शीघ्र ही होने वाला है। इस कारणवश इनका स्थानांतरण नहीं किया गया है।

खंड–4 प्रश्नोत्तर खण्ड–3 में स्थिति स्पष्ट कर दिया गया है।

श्री बाबू लाल :– अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री से जानना चाहता हूँ कि सरकार उनका स्थानांतरण करने जा रही है या नहीं ?

अध्यक्ष :– इन्होंने कहा है कि उनका प्रमोशन होने वाला है, इसलिए नहीं किया गया है।

श्री राजो सिंह :– उनकी बदली किसलिए होगी, वे भूमिहार थोड़े ही हैं, वे पिछड़े वर्ग के हैं, सामाजिक न्याय के आदमी हैं, उनका नाम एस0डी0ओ0 लिस्ट में है, प्रमोशन हो जाने दीजिये।

श्री बाबू लाल :– अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री महोदय से जानना चाहता

हूँ कि सरकार उनका स्थानांतरण करना चाहती है या नहीं ?

श्री तुलसी सिंह :– महोदय, मैंने कहा कि एस0डी0ओ0 लिस्ट में वे अफसर हैं और आगे चला गया है और सामान्यतः जो प्रमोशन लिस्ट में रहते हैं, उनका स्थानांतरण नहीं किया जाता है। यदि एक महीने के अन्दर उनका प्रमोशन नहीं होगा तो उनकी बदली कर दी जायेगी।

श्री रघुनाथ झा :– महोदय, रिमान्ड होम का काम वेलफेयर डिपार्टमेन्ट देखता है, इसको वेलफेयर डिपार्टमेंट में हस्तान्तरित कर दिया गया है।

<u>**फैक्टरी चालू करना**</u>

125. श्री खगेन्द्र प्रसाद :– क्या मंत्री, उद्योग विभाग, यह बतलाने की कृपा करेंगे कि क्या यह बात सही है कि ताला फैक्टरी एवं सेन्ट्रल फिनीसिंग बर्कशॉप, तिलैया डैम, जिला– कोडरमा 1991 से बन्द है, यदि हाँ, तो इस फैक्टरी को चालू कराने के लिये सरकार कौन–सा कदम उठाने का विचार रखती है ?

श्री महावीर प्रसाद :– वस्तुस्थिति यह है कि ताला कारखाना एवं सेन्ट्रल फिनिशिंग वर्कशॉप, तिलैया में माह नवम्बर, दिसम्बर, 95 तक उत्पादन कार्य आंशिक रूप से चालू थी तथा उसके बाद कार्यशील पूँजी के अभाव में उत्पादन एवं बिक्री कार्य ठप्प है।

ये दोनों इकाईयाँ दामोदर घाटी निगम के विस्थापितों को पुनर्वासित करने के उद्देश्य से प्रारंभ हुई थी, परन्तु प्लान्ट एवं मशीनरी पुराने होने के कारण उत्पादित माल बाजार में प्रतिस्पर्धा में नहीं टिक पायी। बिक्री में कठिनाई होने के कारण ये दोनों इकाईयाँ लगातार घाटे में चल रही थी। इन इकाईयों को कार्यरत करने हेतु आधुनिकीकरण पुनर्वास पर अत्यधिक पूँजी की आवश्यकता को देखते हुए इकाईयों को कार्यरत करने में कठिनाई है।

श्री खगेन्द्र प्रसाद :– अध्यक्ष महोदय, हमारा प्रश्न है कि इकाईयाँ संकट में